



कवि और दूसरों का दर्द

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

एक पंछी
तिनका तिनका
चुनकर
जोड़कर
घोसला बनाता
और एक कवि
एक एक शब्द
जोड़कर
छोटी छोटी
संवेदनाओं को
पिरोकर
हैं रचता
एक कविता
एक पंछी का
नहीं होता
कोई ठिकाना
आज यहाँ
कल वहाँ
और एक कवि का
नहीं होता
एक ही फ़साना
एक ही दर्द
वह तो
कभी अपना
कभी पराया
दर्द महसूस करता
और रचता
नई नई कविता



व्यक्त करता
अपनी संवेदनाएं
और आशाएं
दूसरों का दर्द भी
जब अपना लगता
तब बनता
नयी कविता
एक कवि
हर वक्त
दूसरों की मदद
करना चाहता
बंटाना चाहता
हर किसी का दर्द
बस चले तो
दूसरों के लिए
बहा दे
कतरा-कतरा
अपना रक्त
पर कवि
और बनिए में
फर्क होता
कवि आज खाता
कल की सोचता
पर बनिए की क्या कहते
खुद नहीं खाता
पर हैं खाते
उसके सात पुस्तें
कवि चाहता नहीं
पर हैं होता
लाचार
बेवस
चाहकर भी
नहीं कर पाता



दूसरों की सहायता
इसीलिए
शायद
वो हैं रचता
एक कविता
ताकि कोई समझें
उसकी पीड़ा
सबका दर्द
और आये आगे
करने मदद
मेरी नहीं
उनकी नहीं
जिनकी दर्द ने
पाई हैं अभिव्यक्ति
कागज के पन्नों पे
पर कोई सुने तो सही
समझें तो सही
जरूरतमंद की जरूरी
लाचार की लाचारी
बेवस की बवासी
दूसरों का दर्द!